



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोणीय संबंधों में अमेरिका की भूमिका: क्षेत्रीय शक्ति संतुलन का अध्ययन

¹रचना, ²डॉ मीनाक्षी

¹शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, NIILM यूनिवर्सिटी, कैथल, हरियाणा

²असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, NIILM यूनिवर्सिटी, कैथल, हरियाणा

सार

भारत, चीन और पाकिस्तान के त्रिकोणीय संबंध दक्षिण एशिया तथा व्यापक इंडो-पैसिफिक क्षेत्र की भू-राजनीतिक एवं सामरिक संरचना को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में से हैं। इन तीनों देशों के बीच ऐतिहासिक विवाद, सीमा संबंधी समस्याएँ, सैन्य प्रतिस्पर्धा, परमाणु क्षमता, आर्थिक हित तथा बदलती रणनीतिक साझेदारियाँ क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को निरंतर प्रभावित करती रही हैं। इस त्रिकोणीय व्यवस्था में संयुक्त राज्य अमेरिका की भूमिका विशेष महत्त्व रखती है, क्योंकि उसकी दक्षिण एशिया नीति समय-समय पर सुरक्षा आवश्यकताओं, वैश्विक शक्ति समीकरणों तथा चीन के बढ़ते प्रभाव के अनुरूप परिवर्तित हुई है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोणीय संबंधों के संदर्भ में अमेरिका की रणनीतिक भूमिका तथा क्षेत्रीय शक्ति संतुलन पर उसके प्रभाव का विश्लेषण करना है। शीत युद्ध के दौरान अमेरिका और पाकिस्तान के संबंध मुख्यतः सामरिक एवं सुरक्षा सहयोग पर आधारित रहे, जबकि भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाते हुए अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को प्राथमिकता दी। शीत युद्ध की समाप्ति तथा विशेष रूप से इक्कीसवीं सदी में चीन के आर्थिक, सैन्य और राजनीतिक प्रभाव के विस्तार ने अमेरिकी दक्षिण एशिया नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किया। भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु सहयोग, रक्षा साझेदारी, तकनीकी सहयोग तथा इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में बढ़ती रणनीतिक निकटता ने भारत को अमेरिकी क्षेत्रीय रणनीति का महत्वपूर्ण भाग बनाया है। दूसरी ओर, चीन-पाकिस्तान रणनीतिक साझेदारी तथा चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC) ने दक्षिण एशिया में एक वैकल्पिक सामरिक धुरी को सुदृढ़ किया है।

अध्ययन गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है तथा इसमें द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से भारत, चीन, पाकिस्तान और अमेरिका की विदेश एवं सुरक्षा नीतियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि अमेरिका की भूमिका केवल भारत-पाकिस्तान संबंधों तक सीमित न रहकर चीन की बढ़ती क्षेत्रीय एवं वैश्विक शक्ति के संदर्भ में अधिक व्यापक हो गई है। भारत के साथ अमेरिकी रणनीतिक सहयोग चीन के प्रभाव को संतुलित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरा है, जबकि पाकिस्तान के प्रति अमेरिकी नीति सुरक्षा, आतंकवाद, अफगानिस्तान तथा क्षेत्रीय स्थिरता जैसे हितों से प्रभावित रही है। निष्कर्षतः, भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोण में अमेरिकी भूमिका क्षेत्रीय शक्ति संतुलन, रणनीतिक गठबंधनों तथा दक्षिण एशिया की सुरक्षा संरचना को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण बाह्य कारक है।

मुख्य शब्द: भारत-चीन-पाकिस्तान संबंध; संयुक्त राज्य अमेरिका; क्षेत्रीय शक्ति संतुलन; दक्षिण एशियाई सुरक्षा; सामरिक प्रतिस्पर्धा

प्रस्तावना

इक्कीसवीं सदी की अंतरराष्ट्रीय राजनीति में दक्षिण एशिया विश्व की सर्वाधिक संवेदनशील एवं सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक इकाइयों में से एक बनकर उभरा है। भारत, चीन और पाकिस्तान की भौगोलिक निकटता, ऐतिहासिक विवाद, परमाणु क्षमता, सैन्य प्रतिस्पर्धा, आर्थिक हित तथा बदलती रणनीतिक साझेदारियाँ इस क्षेत्र की सुरक्षा व्यवस्था को निरंतर प्रभावित करती रही हैं। इन तीन देशों के पारस्परिक संबंध केवल दक्षिण एशिया तक सीमित नहीं हैं, बल्कि हिंद महासागर, मध्य एशिया और व्यापक इंडो-पैसिफिक क्षेत्र के शक्ति समीकरणों पर भी इनका प्रभाव दिखाई देता है। इस त्रिकोणीय व्यवस्था में संयुक्त राज्य अमेरिका की भूमिका विशेष महत्व रखती है, क्योंकि अमेरिका की दक्षिण एशिया नीति विभिन्न ऐतिहासिक चरणों में शीत युद्ध, आतंकवाद, परमाणु अप्रसार, अफगानिस्तान, चीन के उदय और इंडो-पैसिफिक रणनीति जैसी प्राथमिकताओं से प्रभावित हुई है। इसलिए भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोणीय संबंधों में अमेरिका की भूमिका का विश्लेषण क्षेत्रीय शक्ति संतुलन की बदलती प्रकृति को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

अंतरराष्ट्रीय संबंधों में शक्ति संतुलन की अवधारणा यथार्थवादी विचारधारा का एक प्रमुख आधार है। इस अवधारणा के अनुसार अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में कोई सर्वोच्च केंद्रीय सत्ता नहीं होने के कारण राष्ट्र अपनी सुरक्षा, संप्रभुता और राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए स्वयं अपनी शक्ति बढ़ाने तथा प्रतिद्वंद्वी शक्तियों को संतुलित करने का प्रयास करते हैं। मॉर्गन्थाउ (1948) ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति को राष्ट्रीय हित और शक्ति के संदर्भ में समझाते हुए यह प्रतिपादित किया कि राज्यों के बीच शक्ति की खोज अंतरराष्ट्रीय राजनीति की एक प्रमुख विशेषता है। इसी प्रकार वॉल्ट्ज़ (1979) ने अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की संरचनात्मक प्रकृति पर बल देते हुए स्पष्ट किया कि अराजक अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था राज्यों को अपनी सुरक्षा के लिए शक्ति-संतुलन की रणनीति अपनाने की ओर प्रेरित करती है। भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोणीय संबंधों में इस सिद्धांत की व्यावहारिक अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, क्योंकि तीनों देशों की सुरक्षा नीतियाँ एक-दूसरे की सैन्य क्षमता, रणनीतिक साझेदारी और क्षेत्रीय प्रभाव से प्रभावित होती हैं।

भारत और पाकिस्तान के संबंधों का इतिहास राजनीतिक तनाव, युद्ध, सीमा विवाद और सुरक्षा संबंधी अविश्वास से प्रभावित रहा है। वर्ष 1947 में स्वतंत्रता और विभाजन के पश्चात कश्मीर विवाद दोनों देशों के संबंधों का एक प्रमुख प्रश्न बन गया। इसके बाद हुए सैन्य संघर्षों तथा नियंत्रण रेखा पर समय-समय पर उत्पन्न तनाव ने दोनों देशों की विदेश एवं सुरक्षा नीतियों को प्रभावित किया। भारत और पाकिस्तान दोनों की परमाणु क्षमताओं ने इस प्रतिद्वंद्विता को एक अतिरिक्त सामरिक आयाम प्रदान किया। ऐसी स्थिति में बाहरी शक्तियों, विशेषकर अमेरिका और चीन, के साथ दोनों देशों के संबंधों ने दक्षिण एशिया के शक्ति संतुलन को और अधिक जटिल बनाया है।

शीत युद्ध के प्रारंभिक दशकों में अमेरिका की दक्षिण एशिया नीति मुख्यतः सोवियत संघ को नियंत्रित करने की व्यापक वैश्विक रणनीति से प्रभावित थी। इस अवधि में पाकिस्तान ने अमेरिका के नेतृत्व वाली पश्चिमी सुरक्षा व्यवस्था के साथ निकट संबंध विकसित किए, जबकि भारत ने गुटनिरपेक्षता को अपनी विदेश नीति का आधार बनाया। भारत की नीति का उद्देश्य महाशक्तियों के सैन्य गुटों से दूरी बनाए रखते हुए स्वतंत्र विदेश नीति का संचालन करना था। इसके विपरीत पाकिस्तान ने अपनी सुरक्षा आवश्यकताओं, विशेषकर भारत के संदर्भ में, अमेरिका के साथ रक्षा एवं सामरिक सहयोग को महत्व दिया। परिणामस्वरूप शीत युद्ध के कई चरणों में अमेरिका-पाकिस्तान संबंध अपेक्षाकृत निकट रहे, जबकि भारत-अमेरिका संबंधों में सहयोग के साथ-साथ अनेक मतभेद भी विद्यमान रहे।

वर्ष 1979 में अफगानिस्तान में सोवियत सैन्य हस्तक्षेप के बाद पाकिस्तान का सामरिक महत्व अमेरिका के लिए और अधिक बढ़ गया। पाकिस्तान अफगान प्रतिरोध के समर्थन तथा सोवियत प्रभाव को सीमित करने की अमेरिकी रणनीति में महत्वपूर्ण सहयोगी बन गया। इससे पाकिस्तान को आर्थिक एवं सैन्य सहायता प्राप्त हुई और अमेरिका-पाकिस्तान सुरक्षा संबंधों को नई गति मिली। हालांकि शीत युद्ध की समाप्ति के बाद इन संबंधों की प्रकृति में परिवर्तन आया। क्रोनस्टैड (2023) के अनुसार, अमेरिका-पाकिस्तान संबंध ऐतिहासिक रूप से सुरक्षा संबंधी आवश्यकताओं,

अफगानिस्तान, आतंकवाद, परमाणु नीति और क्षेत्रीय स्थिरता जैसे मुद्दों से प्रभावित होते रहे हैं। इस प्रकार अमेरिका और पाकिस्तान के संबंधों में निरंतरता के साथ-साथ परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तन भी दिखाई देता है।

भारत-चीन संबंधों का विकास भी दक्षिण एशिया के शक्ति संतुलन को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वतंत्रता के बाद प्रारंभिक वर्षों में दोनों देशों के बीच सहयोग की भावना दिखाई दी, किंतु सीमा विवाद और तिब्बत संबंधी प्रश्नों के कारण संबंधों में तनाव बढ़ता गया। वर्ष 1962 के भारत-चीन युद्ध ने दोनों देशों के बीच दीर्घकालिक रणनीतिक अविश्वास की पृष्ठभूमि तैयार की। यद्यपि बाद के दशकों में आर्थिक संबंधों और राजनीतिक संवाद का विस्तार हुआ, तथापि वास्तविक नियंत्रण रेखा से जुड़े विवाद समाप्त नहीं हुए। सीमा पर उत्पन्न तनाव, चीन का सैन्य आधुनिकीकरण तथा दक्षिण एशिया और हिंद महासागर में उसका बढ़ता प्रभाव भारत की सुरक्षा नीति के महत्वपूर्ण निर्धारक बन गए हैं।

भारत-चीन तनाव के समानांतर चीन और पाकिस्तान के बीच रणनीतिक संबंधों का निरंतर विस्तार हुआ। चीन-पाकिस्तान संबंध रक्षा, आधारभूत संरचना, ऊर्जा, व्यापार, कूटनीति और सैन्य प्रौद्योगिकी सहित अनेक क्षेत्रों तक विस्तृत हैं। क्रोनस्टैड (2023) ने पाकिस्तान के संदर्भ में चीन को एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय साझेदार बताते हुए दोनों देशों के व्यापक रक्षा एवं आर्थिक सहयोग को रेखांकित किया है। चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा इस संबंध का प्रमुख आर्थिक और भू-सामरिक आयाम है। यह गलियारा चीन की बेल्ट एंड रोड पहल से संबद्ध है और पाकिस्तान में परिवहन, ऊर्जा तथा आधारभूत संरचना परियोजनाओं के विकास से जुड़ा हुआ है। भारत ने इस परियोजना के कुछ हिस्सों के अपनी संप्रभुता संबंधी दावों वाले क्षेत्र से गुजरने के कारण आपत्ति व्यक्त की है। इसलिए चीन-पाकिस्तान आर्थिक सहयोग का प्रभाव केवल आर्थिक संपर्क तक सीमित नहीं रहता, बल्कि भारत-चीन-पाकिस्तान शक्ति समीकरण को भी प्रभावित करता है।

शीत युद्ध की समाप्ति के बाद और विशेष रूप से इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ से भारत-अमेरिका संबंधों में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ। आर्थिक उदारीकरण के पश्चात भारत की बढ़ती आर्थिक क्षमता, लोकतांत्रिक व्यवस्था, तकनीकी क्षेत्र में विकास और हिंद महासागर में रणनीतिक स्थिति ने अमेरिकी विदेश नीति में भारत के महत्व को बढ़ाया। भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु सहयोग इस परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव था। इसके माध्यम से दोनों देशों के बीच परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग के साथ-साथ व्यापक रणनीतिक विश्वास को भी नई दिशा मिली। समय के साथ रक्षा, अंतरिक्ष, ऊर्जा, व्यापार, समुद्री सुरक्षा, उभरती प्रौद्योगिकी और आतंकवाद-रोधी सहयोग भारत-अमेरिका संबंधों के प्रमुख क्षेत्र बन गए।

भारत-अमेरिका रणनीतिक निकटता को चीन की बढ़ती शक्ति से पूरी तरह अलग करके नहीं देखा जा सकता। चीन का आर्थिक विस्तार, सैन्य आधुनिकीकरण, दक्षिण चीन सागर में उसकी गतिविधियाँ, हिंद महासागर में बढ़ती उपस्थिति तथा बेल्ट एंड रोड पहल के माध्यम से व्यापक आधारभूत संरचनात्मक संपर्क ने अमेरिकी रणनीतिक चिंताओं को प्रभावित किया है। लॉरेंस एवं सटर (2023) के अनुसार, चीन की नीतियों, बढ़ती क्षमताओं और रणनीतिक उद्देश्यों ने अमेरिका में आर्थिक, तकनीकी तथा राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी चिंताओं को बढ़ाया है। परिणामस्वरूप अमेरिका ने इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में अपने सहयोगियों और साझेदार देशों के साथ संबंधों को अधिक महत्व देना प्रारंभ किया। इस संदर्भ में भारत अमेरिका के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदार के रूप में उभरा है।

इंडो-पैसिफिक अवधारणा ने भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोण में अमेरिका की भूमिका को और अधिक व्यापक बना दिया है। हिंद महासागर और प्रशांत महासागर को परस्पर संबद्ध रणनीतिक क्षेत्र के रूप में देखने के कारण समुद्री सुरक्षा, नौवहन की स्वतंत्रता, व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा, आपूर्ति शृंखला, उभरती प्रौद्योगिकी और क्षेत्रीय संपर्क जैसे विषय अमेरिकी रणनीति में महत्वपूर्ण हो गए हैं। भारत की भौगोलिक स्थिति उसे हिंद महासागर क्षेत्र में विशेष रणनीतिक महत्व प्रदान करती है। इसी पृष्ठभूमि में भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के बीच क्वाड सहयोग का विकास हुआ है। क्वाड औपचारिक सैन्य गठबंधन नहीं है, फिर भी समुद्री सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, आधारभूत संरचना और स्वतंत्र एवं खुले इंडो-पैसिफिक के संदर्भ में इसका रणनीतिक महत्व बढ़ा है।

व्हाइट हाउस (2025) द्वारा जारी भारत-अमेरिका संयुक्त नेताओं के वक्तव्य में दोनों देशों की व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी को आगे बढ़ाने, रक्षा संबंधों को मजबूत करने, तकनीकी सहयोग का विस्तार करने और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर बल दिया गया। यह सहयोग इस तथ्य को रेखांकित करता है कि भारत और अमेरिका के बीच संबंध अब पारंपरिक द्विपक्षीय सहयोग से आगे बढ़कर क्षेत्रीय एवं वैश्विक सुरक्षा संरचना से जुड़ चुके हैं। हालांकि भारत ने अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखा है और अमेरिका के साथ बढ़ती निकटता के बावजूद रूस सहित विभिन्न देशों के साथ स्वतंत्र संबंध बनाए रखे हैं। इस कारण भारत-अमेरिका संबंधों को किसी औपचारिक गठबंधन के बजाय साझा हितों पर आधारित रणनीतिक साझेदारी के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

दूसरी ओर, अमेरिका-चीन संबंध समकालीन विश्व राजनीति की सबसे महत्वपूर्ण महाशक्ति प्रतिस्पर्धाओं में से एक बन गए हैं। व्यापार, प्रौद्योगिकी, सेमीकंडक्टर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ताइवान, दक्षिण चीन सागर, सैन्य शक्ति और वैश्विक संस्थाओं में प्रभाव जैसे अनेक मुद्दों पर दोनों देशों के बीच प्रतिस्पर्धा दिखाई देती है। लॉरेंस एवं सटर (2023) ने अमेरिका-चीन संबंधों को व्यापक आर्थिक परस्पर निर्भरता और बढ़ती रणनीतिक प्रतिस्पर्धा से युक्त जटिल संबंध के रूप में प्रस्तुत किया है। चीन के उदय ने अमेरिकी नीति निर्माताओं को एशिया में शक्ति संतुलन के नए साधनों और साझेदारियों पर अधिक ध्यान देने के लिए प्रेरित किया है। भारत के साथ बढ़ता अमेरिकी सहयोग इसी व्यापक रणनीतिक परिवर्तन के संदर्भ में विशेष महत्व प्राप्त करता है।

पाकिस्तान के प्रति अमेरिकी नीति में भी समय के साथ परिवर्तन हुआ है। 11 सितंबर 2001 के आतंकवादी हमलों के बाद आतंकवाद के विरुद्ध अमेरिकी अभियान और अफगानिस्तान में सैन्य हस्तक्षेप के कारण पाकिस्तान पुनः अमेरिकी सुरक्षा नीति का महत्वपूर्ण भाग बन गया। पाकिस्तान की भौगोलिक स्थिति और अफगानिस्तान से संबंधित रणनीतिक महत्व ने दोनों देशों के बीच सुरक्षा सहयोग को बढ़ाया। किंतु आतंकवादी संगठनों, अफगान नीति, पारस्परिक अविश्वास और चीन के साथ पाकिस्तान की बढ़ती निकटता ने इस संबंध को जटिल बनाए रखा। अफगानिस्तान से अमेरिकी सैन्य वापसी के बाद अमेरिका-पाकिस्तान संबंधों के पुराने सुरक्षा-केंद्रित स्वरूप में परिवर्तन आया है, यद्यपि आतंकवाद, परमाणु सुरक्षा, क्षेत्रीय स्थिरता और भारत-पाकिस्तान तनाव जैसे मुद्दों के कारण पाकिस्तान की प्रासंगिकता बनी हुई है (क्रोनस्टैड, 2023)।

भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोणीय संबंधों का एक अत्यंत संवेदनशील पक्ष परमाणु शक्ति संतुलन है। तीनों देश परमाणु हथियार संपन्न हैं और इनके बीच गंभीर सुरक्षा विवाद मौजूद हैं। भारत की परमाणु एवं रक्षा नीति में चीन और पाकिस्तान दोनों से संबंधित सुरक्षा वातावरण का महत्व है, जबकि पाकिस्तान अपनी सामरिक क्षमता को मुख्यतः भारत के संदर्भ में देखता रहा है। चीन की व्यापक सैन्य और परमाणु क्षमता तथा पाकिस्तान के साथ उसके रक्षा संबंध भारत के सुरक्षा आकलन को प्रभावित करते हैं। ऐसी स्थिति में भारत के साथ अमेरिकी रक्षा एवं तकनीकी सहयोग क्षेत्रीय शक्ति संतुलन पर अप्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। हालांकि परमाणु प्रतिरोध बड़े पैमाने के युद्ध को रोकने का माध्यम हो सकता है, फिर भी सीमा विवाद, सैन्य तनाव और गलत आकलन क्षेत्रीय स्थिरता के लिए गंभीर चुनौती बने रहते हैं।

समकालीन शक्ति संतुलन केवल सैन्य क्षमताओं से निर्धारित नहीं होता, बल्कि आर्थिक शक्ति, तकनीकी क्षमता, ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री संपर्क और आधारभूत संरचना भी इसके महत्वपूर्ण घटक हैं। चीन की बेल्ट एंड रोड पहल तथा चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा भू-अर्थशास्त्र और भू-राजनीति के इस संबंध को स्पष्ट करते हैं। वहीं भारत और अमेरिका रक्षा प्रौद्योगिकी, महत्वपूर्ण एवं उभरती तकनीकों, आपूर्ति शृंखलाओं, ऊर्जा और समुद्री सहयोग जैसे क्षेत्रों में अपनी साझेदारी को विस्तृत कर रहे हैं। व्हाइट हाउस (2025) ने भारत-अमेरिका सहयोग में रक्षा, व्यापार, ऊर्जा, प्रौद्योगिकी और हिंद महासागर क्षेत्र से संबंधित सहयोग के विस्तार को महत्वपूर्ण स्थान दिया। इससे स्पष्ट है कि वर्तमान क्षेत्रीय शक्ति संतुलन में सैन्य शक्ति के साथ आर्थिक और तकनीकी क्षमताएँ भी निर्णायक भूमिका निभा रही हैं।

इस प्रकार भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोणीय संबंधों में अमेरिका की भूमिका बहुआयामी है। अमेरिका एक ओर चीन के बढ़ते प्रभाव के संदर्भ में भारत के साथ रणनीतिक साझेदारी को सुदृढ़ कर रहा है, तो दूसरी ओर पाकिस्तान को आतंकवाद, परमाणु सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता जैसे प्रश्नों के कारण पूरी तरह उपेक्षित नहीं कर सकता। इसी प्रकार अमेरिका और चीन के बीच प्रतिस्पर्धा होने के बावजूद दोनों देशों की आर्थिक परस्पर निर्भरता और वैश्विक समस्याओं

पर संवाद की आवश्यकता बनी रहती है। इस कारण दक्षिण एशिया में अमेरिकी नीति को केवल किसी एक देश के समर्थन अथवा दूसरे देश के विरोध के रूप में समझना पर्याप्त नहीं है। यह नीति राष्ट्रीय हित, वैश्विक रणनीति, क्षेत्रीय सुरक्षा और बदलते शक्ति समीकरणों के संयोजन से निर्मित होती है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोणीय संबंधों में संयुक्त राज्य अमेरिका की भूमिका का क्षेत्रीय शक्ति संतुलन के दृष्टिकोण से विश्लेषण करना है। अध्ययन भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी, चीन-पाकिस्तान सहयोग, अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा और अमेरिका-पाकिस्तान संबंधों के बदलते स्वरूप के बीच अंतर्संबंधों को समझने का प्रयास करता है। शक्ति संतुलन के सैद्धांतिक दृष्टिकोण से यह कहा जा सकता है कि दक्षिण एशिया की सुरक्षा संरचना अब केवल भारत-पाकिस्तान की पारंपरिक प्रतिद्वंद्विता तक सीमित नहीं रही है। चीन के उदय, भारत की बढ़ती वैश्विक भूमिका, चीन-पाकिस्तान रणनीतिक साझेदारी और अमेरिका की इंडो-पैसिफिक प्राथमिकताओं ने इसे एक जटिल बहुस्तरीय शक्ति संरचना में परिवर्तित कर दिया है। इस दृष्टि से भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोण में अमेरिकी भूमिका का अध्ययन दक्षिण एशियाई सुरक्षा, एशियाई शक्ति संतुलन तथा इक्कीसवीं सदी की बदलती विश्व व्यवस्था को समझने के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

साहित्य समीक्षा

भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोणीय संबंधों में अमेरिका की भूमिका का अध्ययन दक्षिण एशिया की बदलती सुरक्षा संरचना, सामरिक प्रतिस्पर्धा, परमाणु प्रतिरोध, चीन-पाकिस्तान साझेदारी, भारत-अमेरिका रणनीतिक सहयोग तथा इंडो-पैसिफिक की उभरती भू-राजनीति को समझने के लिए आवश्यक है। उपलब्ध साहित्य यह दर्शाता है कि इस त्रिकोणीय व्यवस्था का निर्माण केवल तीन देशों के पारस्परिक संबंधों से नहीं हुआ है, बल्कि अमेरिका जैसी बाह्य महाशक्ति की नीतियों ने भी क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को प्रभावित किया है। इस संदर्भ में निम्नलिखित अध्ययनों की समीक्षा प्रस्तुत की गई है।

टेलिस (2005) ने भारत के उभरते वैश्विक शक्ति स्वरूप तथा अमेरिकी रणनीतिक हितों के संदर्भ में भारत के बढ़ते महत्त्व का विश्लेषण किया। अध्ययन में भारत की आर्थिक क्षमता, लोकतांत्रिक व्यवस्था, सैन्य शक्ति, तकनीकी विकास और भौगोलिक स्थिति को अमेरिकी विदेश नीति के लिए महत्त्वपूर्ण माना गया है। लेखक का तर्क है कि एशिया में भारत का शक्ति-संपन्न होना अमेरिकी दीर्घकालिक हितों के लिए लाभकारी हो सकता है। चीन के बढ़ते प्रभाव के संदर्भ में भारत की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। यह अध्ययन भारत-अमेरिका रणनीतिक निकटता को एशियाई शक्ति संतुलन के व्यापक संदर्भ में समझने के लिए उपयोगी आधार प्रदान करता है।

कोहेन (2001) ने भारत की सामरिक सोच, विदेश नीति, सैन्य क्षमता और क्षेत्रीय शक्ति के रूप में उसके विकास का व्यापक अध्ययन किया। लेखक के अनुसार भारत की रणनीतिक चिंताएँ केवल पाकिस्तान तक सीमित नहीं हैं, बल्कि चीन की बढ़ती शक्ति तथा व्यापक एशियाई सुरक्षा व्यवस्था भी भारतीय नीति को प्रभावित करती है। भारत की आर्थिक और सैन्य क्षमताओं में वृद्धि ने उसे दक्षिण एशिया से आगे वैश्विक राजनीति में अधिक महत्त्वपूर्ण बनाया है। अध्ययन में अमेरिका के साथ भारत के संबंधों में संभावित रणनीतिक निकटता को भी रेखांकित किया गया है। यह अध्ययन भारत की क्षेत्रीय और वैश्विक भूमिका तथा शक्ति संतुलन में उसकी स्थिति समझने में उपयोगी है।

गांगुली (2002) ने भारत-पाकिस्तान संबंधों में निरंतर बने रहने वाले संघर्ष और तनाव के ऐतिहासिक, राजनीतिक तथा सामरिक कारणों का विश्लेषण किया। अध्ययन में कश्मीर विवाद, विभाजन की विरासत, युद्धों, सुरक्षा संबंधी अविश्वास और परमाणु क्षमताओं को दोनों देशों की प्रतिद्वंद्विता के प्रमुख कारकों के रूप में देखा गया है। लेखक के अनुसार परमाणु हथियारों की उपलब्धता ने पूर्ण युद्ध की संभावनाओं को प्रभावित किया है, किंतु सीमित संघर्ष और राजनीतिक तनाव समाप्त नहीं हुए। अमेरिका सहित बाहरी शक्तियों की नीतियों ने भी भारत-पाकिस्तान संबंधों को प्रभावित किया है। यह अध्ययन दक्षिण एशिया की सुरक्षा दुविधा को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है।

पॉल (2005) ने भारत-पाकिस्तान प्रतिद्वंद्विता को दीर्घकालिक संघर्ष और शक्ति की विषमता के दृष्टिकोण से समझाया। भारत की जनसंख्या, अर्थव्यवस्था और पारंपरिक सैन्य शक्ति पाकिस्तान की तुलना में अधिक होने के बावजूद

पाकिस्तान ने विभिन्न रणनीतिक उपायों द्वारा इस असमानता को संतुलित करने का प्रयास किया है। परमाणु क्षमता तथा बाहरी शक्तियों के साथ रणनीतिक संबंध इस प्रक्रिया के महत्वपूर्ण साधन रहे हैं। चीन के साथ पाकिस्तान की निकटता और विभिन्न अवधियों में अमेरिका से प्राप्त सहयोग ने क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को प्रभावित किया। यह अध्ययन बताता है कि दक्षिण एशिया में गठबंधन और बाहरी साझेदारियाँ शक्ति असमानता को संतुलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

गार्वर (2001) ने भारत और चीन के संबंधों को प्रतिस्पर्धा, रणनीतिक अविश्वास तथा सीमित सहयोग की ऐतिहासिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया। लेखक ने सीमा विवाद, तिब्बत, पाकिस्तान के साथ चीन के संबंध, दक्षिण एशिया में प्रभाव और व्यापक एशियाई शक्ति राजनीति को भारत-चीन संबंधों के प्रमुख निर्धारकों के रूप में पहचाना। चीन-पाकिस्तान रणनीतिक सहयोग भारत की सुरक्षा चिंताओं को बढ़ाने वाला महत्वपूर्ण तत्व रहा है। वहीं भारत की बढ़ती क्षेत्रीय क्षमता चीन के रणनीतिक आकलन को प्रभावित करती है। यह अध्ययन भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोणीय संबंधों की ऐतिहासिक जड़ों तथा क्षेत्रीय शक्ति संतुलन की दीर्घकालिक प्रकृति को समझने में विशेष रूप से उपयोगी है।

स्मॉल (2015) ने चीन-पाकिस्तान संबंधों को एशिया की महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदारियों में से एक के रूप में विश्लेषित किया। अध्ययन में दोनों देशों के रक्षा सहयोग, परमाणु संबंध, आर्थिक साझेदारी, अफगानिस्तान संबंधी हित तथा भारत के प्रति रणनीतिक दृष्टिकोण की चर्चा की गई है। पाकिस्तान के लिए चीन का सहयोग भारत के साथ मौजूद शक्ति असमानता को संतुलित करने का एक महत्वपूर्ण साधन रहा है। वहीं चीन के लिए पाकिस्तान दक्षिण एशिया और हिंद महासागर में रणनीतिक महत्व रखता है। चीन-पाकिस्तान संबंधों की गहराई अमेरिका और भारत दोनों की क्षेत्रीय रणनीतियों को प्रभावित करती है। अतः यह अध्ययन त्रिकोणीय शक्ति संतुलन के विश्लेषण में विशेष महत्व रखता है।

मोहन (2012) ने हिंद महासागर में भारत और चीन की बढ़ती रणनीतिक प्रतिस्पर्धा का विश्लेषण किया। लेखक के अनुसार आर्थिक विकास, ऊर्जा आवश्यकताओं और अंतरराष्ट्रीय व्यापार ने दोनों देशों के लिए समुद्री मार्गों की सुरक्षा का महत्व बढ़ाया है। चीन की हिंद महासागर में बढ़ती उपस्थिति तथा पाकिस्तान सहित क्षेत्रीय देशों के साथ बंदरगाह और आधारभूत संरचना संबंधी सहयोग ने भारत की समुद्री सुरक्षा चिंताओं को प्रभावित किया है। दूसरी ओर, हिंद महासागर में अमेरिका की दीर्घकालिक सैन्य और रणनीतिक उपस्थिति भारत-अमेरिका सहयोग के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है। अध्ययन इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में विकसित हो रहे व्यापक शक्ति संतुलन को समझने में उपयोगी है।

मेडकाल्फ (2020) ने इंडो-पैसिफिक को समकालीन वैश्विक शक्ति राजनीति के प्रमुख केंद्र के रूप में प्रस्तुत किया है। लेखक के अनुसार चीन के बढ़ते आर्थिक और सैन्य प्रभाव ने एशिया की रणनीतिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किया है। हिंद महासागर और प्रशांत महासागर को एक संयुक्त रणनीतिक क्षेत्र के रूप में देखने से भारत की भूमिका का विस्तार हुआ है। अमेरिका, भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के बीच सहयोग चीन के प्रभाव के बीच एक बहुध्रुवीय क्षेत्रीय व्यवस्था बनाए रखने से भी संबंधित है। यह अध्ययन भारत-अमेरिका सहयोग और भारत-चीन प्रतिस्पर्धा को व्यापक इंडो-पैसिफिक शक्ति संतुलन के संदर्भ में समझने के लिए उपयोगी है।

फ्रावेल (2008) ने चीन के क्षेत्रीय विवादों और सीमा नीति का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि चीन ने विभिन्न सीमा विवादों में परिस्थितियों के अनुसार वार्ता, समझौता, राजनीतिक दबाव और सैन्य शक्ति का उपयोग किया है। चीन की सीमा संबंधी रणनीति को समझना भारत-चीन संबंधों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि वास्तविक नियंत्रण रेखा से जुड़े विवाद दोनों देशों के बीच सुरक्षा अविश्वास का प्रमुख स्रोत रहे हैं। सीमा तनाव भारत की सैन्य तैयारी और चीन संबंधी रणनीतिक दृष्टिकोण को प्रभावित करता है। अप्रत्यक्ष रूप से यह परिस्थिति भारत-अमेरिका रक्षा और सुरक्षा सहयोग की बढ़ती प्रासंगिकता को भी स्पष्ट करती है।

मार्की (2013) ने अमेरिका-पाकिस्तान संबंधों की जटिलता को सहयोग, अविश्वास और रणनीतिक आवश्यकता के दृष्टिकोण से समझाया। लेखक के अनुसार अफगानिस्तान, आतंकवाद, परमाणु सुरक्षा, पाकिस्तान की आंतरिक

राजनीति और भारत-पाकिस्तान प्रतिद्वंद्विता अमेरिकी नीति के प्रमुख निर्धारक रहे हैं। दोनों देशों के संबंध कई अवसरों पर तनावपूर्ण रहे, फिर भी क्षेत्रीय सुरक्षा आवश्यकताओं ने उनके बीच सहयोग को बनाए रखा। चीन के साथ पाकिस्तान की बढ़ती रणनीतिक निकटता अमेरिकी प्रभाव के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती भी प्रस्तुत करती है। यह अध्ययन भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोणीय संबंधों में अमेरिका की पाकिस्तान नीति की सीमाओं, विरोधाभासों और रणनीतिक महत्त्व को समझने के लिए उपयोगी है।

पर्कोविच (1999) ने भारत के परमाणु कार्यक्रम के विकास और उसके घरेलू तथा अंतरराष्ट्रीय कारणों का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत किया। लेखक ने भारत की परमाणु नीति को चीन की परमाणु क्षमता, पाकिस्तान के साथ सुरक्षा प्रतिस्पर्धा और वैश्विक परमाणु व्यवस्था से जोड़कर देखा है। अध्ययन बताता है कि भारत की परमाणु नीति केवल भारत-पाकिस्तान प्रतिद्वंद्विता का परिणाम नहीं थी, बल्कि चीन से संबंधित दीर्घकालिक सुरक्षा चिंताएँ भी इसमें महत्वपूर्ण थीं। भारत की परमाणु क्षमता ने अमेरिका की परमाणु अप्रसार नीति तथा भारत-अमेरिका संबंधों को भी प्रभावित किया। यह अध्ययन त्रिकोणीय परमाणु प्रतिरोध और क्षेत्रीय सामरिक संतुलन समझने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मदान (2020) ने भारत-अमेरिका संबंधों के विकास में चीन की भूमिका का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत किया। अध्ययन यह दर्शाता है कि चीन से संबंधित रणनीतिक चिंताओं ने विभिन्न अवधियों में भारत और अमेरिका के पारस्परिक दृष्टिकोण को प्रभावित किया। भारत ने चीन के साथ प्रतिस्पर्धा के बावजूद अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखने का प्रयास किया, जबकि अमेरिका ने एशिया में शक्ति संतुलन के संदर्भ में भारत की भूमिका को क्रमशः अधिक महत्त्व दिया। लेखक के अनुसार भारत-अमेरिका संबंधों को केवल चीन-विरोधी साझेदारी के रूप में देखना उचित नहीं है, किंतु चीन दोनों देशों के रणनीतिक अभिसरण का महत्वपूर्ण कारक रहा है। यह अध्ययन वर्तमान शोध के लिए प्रत्यक्ष रूप से प्रासंगिक है।

शोध के उद्देश्य

1. भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोणीय संबंधों में संयुक्त राज्य अमेरिका की रणनीतिक भूमिका एवं उसके प्रभाव का विश्लेषण करना।
2. अमेरिकी विदेश एवं सुरक्षा नीति के संदर्भ में दक्षिण एशिया के क्षेत्रीय शक्ति संतुलन पर भारत-चीन-पाकिस्तान संबंधों के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध "भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोणीय संबंधों में अमेरिका की भूमिका: क्षेत्रीय शक्ति संतुलन का अध्ययन" की प्रकृति मुख्यतः गुणात्मक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है। अध्ययन का उद्देश्य भारत, चीन और पाकिस्तान के पारस्परिक संबंधों में संयुक्त राज्य अमेरिका की रणनीतिक भूमिका तथा दक्षिण एशिया के क्षेत्रीय शक्ति संतुलन पर उसके प्रभाव का विश्लेषण करना है। शोध में मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित अध्ययन पद्धति अपनाई गई है। इसके अंतर्गत प्रकाशित पुस्तकों, शोध-पत्रों, शोध जर्नलों, सरकारी दस्तावेजों, नीति-पत्रों, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्टों, रक्षा एवं विदेश नीति संबंधी दस्तावेजों तथा विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोतों से प्राप्त सामग्री का उपयोग किया गया है।

अध्ययन में भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी, चीन-पाकिस्तान सामरिक सहयोग, अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा तथा अमेरिका-पाकिस्तान संबंधों के बदलते स्वरूप का तुलनात्मक एवं विषयवस्तु विश्लेषण किया गया है। इसके अतिरिक्त भारत-चीन सीमा विवाद, भारत-पाकिस्तान संबंध, चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा, परमाणु प्रतिरोध, रक्षा सहयोग, इंडो-पैसिफिक रणनीति तथा क्षेत्रीय सुरक्षा जैसे प्रमुख आयामों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। विभिन्न अवधियों

में अमेरिकी विदेश नीति में आए परिवर्तनों को समझने के लिए आवश्यकतानुसार ऐतिहासिक पद्धति का भी प्रयोग किया गया है।

शोध का सैद्धांतिक आधार अंतरराष्ट्रीय संबंधों के यथार्थवादी दृष्टिकोण एवं शक्ति-संतुलन सिद्धांत पर आधारित है। संकलित तथ्यों और नीतिगत दस्तावेजों का तुलनात्मक विश्लेषण करके यह समझने का प्रयास किया गया है कि अमेरिका की बदलती रणनीतिक प्राथमिकताओं ने भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोणीय संबंधों और दक्षिण एशियाई शक्ति संतुलन को किस प्रकार प्रभावित किया है। इस प्रकार अध्ययन गुणात्मक साक्ष्यों के आधार पर क्षेत्रीय भू-राजनीतिक परिवर्तनों की व्यवस्थित व्याख्या प्रस्तुत करता है।

विश्लेषण एवं विवेचना

प्रस्तुत अध्ययन का केंद्रीय आधार यह समझना है कि भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोणीय संबंधों में संयुक्त राज्य अमेरिका की रणनीतिक भूमिका किस प्रकार परिवर्तित हुई है और इसका दक्षिण एशिया के क्षेत्रीय शक्ति संतुलन पर क्या प्रभाव पड़ा है। अध्ययन के प्रथम उद्देश्य के अंतर्गत अमेरिका की रणनीतिक भूमिका का विश्लेषण किया गया है, जबकि दूसरे उद्देश्य में अमेरिकी विदेश एवं सुरक्षा नीति के संदर्भ में भारत, चीन और पाकिस्तान के पारस्परिक संबंधों द्वारा निर्मित क्षेत्रीय शक्ति संतुलन का अध्ययन किया गया है। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि दक्षिण एशिया का वर्तमान शक्ति समीकरण पारंपरिक भारत-पाकिस्तान प्रतिद्वंद्विता से आगे बढ़कर भारत-चीन प्रतिस्पर्धा, चीन-पाकिस्तान रणनीतिक साझेदारी और भारत-अमेरिका सहयोग से निर्मित बहुस्तरीय व्यवस्था में परिवर्तित हो चुका है।

भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोण में अमेरिका की बदलती रणनीतिक भूमिका

शीत युद्ध के दौरान अमेरिका की दक्षिण एशिया नीति मुख्यतः सोवियत संघ को नियंत्रित करने और अपने वैश्विक रणनीतिक हितों की रक्षा करने से प्रेरित थी। इस अवधि में पाकिस्तान अमेरिकी सुरक्षा नीति का महत्वपूर्ण सहयोगी बना, जबकि भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई। परिणामस्वरूप भारत और अमेरिका के बीच संबंध सीमित रहे तथा पाकिस्तान को अमेरिकी सैन्य एवं आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। अफगानिस्तान में सोवियत हस्तक्षेप ने पाकिस्तान के सामरिक महत्त्व को और बढ़ाया। इसके विपरीत शीत युद्ध की समाप्ति, भारत की आर्थिक शक्ति में वृद्धि और चीन के उदय ने अमेरिकी दक्षिण एशिया नीति की प्राथमिकताओं को परिवर्तित किया।

इक्कीसवीं सदी में अमेरिका ने भारत को केवल दक्षिण एशियाई शक्ति के बजाय हिंद महासागर और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदार के रूप में देखना प्रारंभ किया। अख्तर एवं क्रोनस्टैड (2025) के अनुसार, वर्ष 2000 के बाद लगातार अमेरिकी प्रशासन भारत के साथ रणनीतिक साझेदारी को विकसित और गहरा करते रहे हैं। भारत की समुद्री एवं ऊर्जा मार्गों के निकट भौगोलिक स्थिति, बढ़ती रक्षा क्षमता तथा विज्ञान, अंतरिक्ष और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों की क्षमताएँ अमेरिका के लिए भारत के रणनीतिक महत्त्व को बढ़ाती हैं।

वर्ष 2025 में भारत और अमेरिका ने अपनी व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी को पुनः पुष्ट किया तथा रक्षा, व्यापार और प्रौद्योगिकी सहयोग को गति देने के लिए नई पहल की। दोनों देशों ने रक्षा साझेदारी के लिए नए दस-वर्षीय ढाँचे की दिशा में कार्य करने, रक्षा औद्योगिक सहयोग बढ़ाने तथा स्वतंत्र, खुले, शांतिपूर्ण और समृद्ध इंडो-पैसिफिक के लिए सहयोग को महत्त्व देने की प्रतिबद्धता व्यक्त की (व्हाइट हाउस, 2025)। इससे स्पष्ट है कि अमेरिकी रणनीति में भारत का महत्त्व अब केवल द्विपक्षीय संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यापक एशियाई शक्ति संतुलन से जुड़ा हुआ है।

तालिका 1: भारत, चीन और पाकिस्तान के प्रति अमेरिकी रणनीतिक दृष्टिकोण का तुलनात्मक स्वरूप

देश	अमेरिका के प्रमुख हित	सहयोग/प्रतिस्पर्धा का स्वरूप	शक्ति संतुलन पर प्रभाव
भारत	इंडो-पैसिफिक सुरक्षा, रक्षा, प्रौद्योगिकी, समुद्री सहयोग	बढ़ती रणनीतिक साझेदारी	भारत की क्षेत्रीय क्षमता को सुदृढ़ करने की संभावना
चीन	आर्थिक संबंध, रणनीतिक प्रतिस्पर्धा, तकनीकी एवं सैन्य प्रश्न	सहयोग और प्रतिस्पर्धा का मिश्रण	एशियाई शक्ति संतुलन का प्रमुख निर्धारक
पाकिस्तान	आतंकवाद-रोधी हित, परमाणु सुरक्षा, क्षेत्रीय स्थिरता	सीमित एवं मुद्दा-आधारित सहयोग	भारत-पाक तनाव तथा चीन-पाक साझेदारी से प्रभावित

स्रोत: व्हाइट हाउस (2025); अख्तर एवं क्रोनस्टैड (2025); क्रोनस्टैड (2023) के आधार पर लेखक द्वारा संकलित।

तालिका से स्पष्ट है कि अमेरिका की नीति तीनों देशों के प्रति एक समान नहीं है। भारत के साथ संबंध दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदारी की ओर बढ़े हैं, जबकि चीन के साथ आर्थिक अंतर्निर्भरता के बावजूद सामरिक और तकनीकी प्रतिस्पर्धा प्रमुख बनी हुई है। पाकिस्तान के साथ संबंधों का स्वरूप अफगानिस्तान से अमेरिकी वापसी के बाद अपेक्षाकृत सीमित हुआ, किंतु आतंकवाद, परमाणु सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता के कारण पाकिस्तान अमेरिकी नीति में प्रासंगिक बना हुआ है। अतः अमेरिका भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोण में किसी एक आयामी गठबंधन नीति के बजाय अलग-अलग हितों पर आधारित बहुस्तरीय रणनीति अपनाता दिखाई देता है।

भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी और क्षेत्रीय शक्ति संतुलन

भारत-अमेरिका संबंधों में परिवर्तन वर्तमान त्रिकोणीय शक्ति समीकरण का एक महत्वपूर्ण घटक है। शीत युद्ध के दौरान दोनों देशों के बीच रणनीतिक दूरी की तुलना में वर्तमान संबंध रक्षा, तकनीकी सहयोग, समुद्री सुरक्षा, व्यापार और बहुपक्षीय समन्वय तक विस्तृत हो चुके हैं। भारत की बढ़ती शक्ति और चीन के साथ उसकी रणनीतिक प्रतिस्पर्धा ने दोनों देशों के साझा हितों को बढ़ाया है।

भारत के लिए अमेरिका आधुनिक रक्षा प्रौद्योगिकी, समुद्री सुरक्षा और उच्च प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण साझेदार है। वहीं अमेरिका भारत को इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में देखता है। वर्ष 2025 के संयुक्त वक्तव्य में भारत-अमेरिका रक्षा साझेदारी के विस्तार, सैन्य अंतर-संचालनीयता तथा रक्षा औद्योगिक सहयोग को बढ़ाने पर विशेष बल दिया गया (व्हाइट हाउस, 2025)। हालांकि भारत की रणनीतिक स्वायत्तता इस साझेदारी की एक विशिष्ट विशेषता है। भारत अमेरिकी औपचारिक सैन्य गठबंधन व्यवस्था का सदस्य नहीं है और विभिन्न वैश्विक शक्तियों के साथ स्वतंत्र संबंध बनाए रखता है।

इस प्रकार भारत-अमेरिका सहयोग को प्रत्यक्ष चीन-विरोधी सैन्य गठबंधन के रूप में देखने के बजाय साझा सामरिक हितों के अभिसरण के रूप में समझना अधिक उचित है। भारत के लिए यह साझेदारी अपनी रक्षा और तकनीकी क्षमताओं को मजबूत करने का माध्यम है, जबकि अमेरिका के लिए एक शक्तिशाली और स्वतंत्र भारत एशिया में अधिक संतुलित शक्ति संरचना का समर्थन कर सकता है।

चीन-पाकिस्तान रणनीतिक साझेदारी और अमेरिकी हित

चीन-पाकिस्तान संबंध भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोण की सबसे स्थायी रणनीतिक साझेदारियों में से एक हैं। रक्षा सहयोग, सैन्य प्रौद्योगिकी, आर्थिक निवेश और चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे ने इस साझेदारी को बहुआयामी स्वरूप प्रदान किया है। पाकिस्तान के लिए चीन भारत के साथ शक्ति असमानता को संतुलित करने वाला प्रमुख

साझेदार रहा है। वहीं चीन के लिए पाकिस्तान दक्षिण एशिया, अरब सागर और हिंद महासागर तक पहुँच की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

क्रोनस्टैड (2023) के अनुसार, पाकिस्तान के चीन के साथ बढ़ते संबंध और भारत के साथ उसकी दीर्घकालिक प्रतिद्वंद्विता अमेरिकी क्षेत्रीय उद्देश्यों को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं। अफगानिस्तान से अमेरिकी सैन्य वापसी और अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा में वृद्धि ने अमेरिका-पाकिस्तान संबंधों की पारंपरिक सुरक्षा-केंद्रित संरचना को भी बदल दिया। इससे पाकिस्तान की अमेरिकी रणनीति में भूमिका समाप्त नहीं हुई, बल्कि उसका स्वरूप अधिक चयनात्मक और मुद्दा-आधारित हो गया।

चीन-पाकिस्तान सहयोग भारत के लिए विशेष रूप से इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे भारत के पश्चिमी और उत्तरी सुरक्षा वातावरण के बीच रणनीतिक संबंध बनता है। वर्ष 2025 के भारत-चीन संबंधों पर अमेरिकी कांग्रेसनल रिसर्च सर्विस के विश्लेषण में भी पाकिस्तान के प्रति चीन के समर्थन और 2025 के भारत-पाकिस्तान संघर्ष में चीनी मूल के सैन्य उपकरणों के उपयोग को भारत की चीन संबंधी चिंताओं को तीव्र करने वाला कारक बताया गया है (बारियोस एवं क्रोनस्टैड, 2025)।

सैन्य क्षमता और शक्ति संतुलन

क्षेत्रीय शक्ति संतुलन का विश्लेषण केवल कूटनीतिक संबंधों के आधार पर नहीं किया जा सकता। सैन्य संसाधन भी राज्यों की रणनीतिक क्षमता के महत्वपूर्ण संकेतक हैं। स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान के अनुसार 2024 में वैश्विक सैन्य व्यय लगभग 2.718 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया। अमेरिका विश्व का सबसे बड़ा सैन्य व्ययकर्ता रहा, जबकि चीन दूसरे और भारत पाँचवें स्थान पर रहे (लियांग एवं अन्य, 2025)।

तालिका 2: चयनित देशों का सैन्य व्यय, 2024

देश	अनुमानित सैन्य व्यय (अरब अमेरिकी डॉलर)	वैश्विक/क्षेत्रीय स्थिति
संयुक्त राज्य अमेरिका	997	विश्व में प्रथम
चीन	314	विश्व में द्वितीय
भारत	86.1	विश्व में पाँचवाँ

स्रोत: स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान, 2025; लियांग एवं अन्य (2025)।

तालिका से अमेरिका, चीन और भारत की सैन्य संसाधन क्षमता में उल्लेखनीय अंतर दिखाई देता है। अमेरिका का 2024 का अनुमानित सैन्य व्यय चीन की तुलना में तीन गुना से अधिक था, जबकि चीन का व्यय भारत से भी काफी अधिक रहा। यह मात्र व्यय की तुलना है और इससे वास्तविक युद्ध क्षमता का पूर्ण निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता, किंतु यह उपलब्ध संसाधनों के पैमाने का संकेत देता है। भारत के लिए चीन की बढ़ती सैन्य क्षमता और पाकिस्तान के साथ उसके रक्षा संबंध दोहरे सुरक्षा दबाव की धारणा उत्पन्न करते हैं। ऐसी स्थिति में भारत-अमेरिका रक्षा और प्रौद्योगिकी सहयोग क्षेत्रीय शक्ति संतुलन में विशेष रणनीतिक महत्व प्राप्त करता है।

भारत-पाकिस्तान तनाव और अमेरिका की भूमिका

भारत-पाकिस्तान प्रतिद्वंद्विता दक्षिण एशिया की सुरक्षा संरचना का केंद्रीय तत्व है। कश्मीर, सीमा-पार आतंकवाद, नियंत्रण रेखा और परमाणु प्रतिरोध जैसे मुद्दे दोनों देशों के संबंधों को प्रभावित करते हैं। मई 2025 में दोनों परमाणु-सशस्त्र देशों के बीच दशकों के सबसे गंभीर सैन्य तनावों में से एक उत्पन्न हुआ। अमेरिकी नीति-निर्माताओं ने संघर्ष के सुरक्षा, आर्थिक और मानवीय प्रभावों पर चिंता व्यक्त की (क्रोनस्टैड, 2025)।

इससे यह स्पष्ट होता है कि अमेरिका के लिए भारत और पाकिस्तान के बीच स्थिरता अभी भी महत्वपूर्ण है। भारत के साथ अमेरिका की रणनीतिक निकटता बढ़ने के बावजूद पाकिस्तान को पूरी तरह नज़रअंदाज़ करना अमेरिकी क्षेत्रीय हितों के अनुरूप नहीं होगा। पाकिस्तान की परमाणु क्षमता, आतंकवाद संबंधी सुरक्षा प्रश्न और चीन के साथ उसकी साझेदारी उसे दक्षिण एशिया के शक्ति संतुलन में महत्वपूर्ण बनाए रखते हैं।

तालिका 3: क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को प्रभावित करने वाले प्रमुख संबंध

संबंध	प्रमुख आधार	क्षेत्रीय प्रभाव
भारत-अमेरिका	रक्षा, प्रौद्योगिकी, इंडो-पैसिफिक, समुद्री सुरक्षा	भारत की रणनीतिक क्षमता एवं क्षेत्रीय भूमिका का विस्तार
चीन-पाकिस्तान	रक्षा, आर्थिक सहयोग, CPEC, कूटनीतिक साझेदारी	भारत पर सामरिक दबाव एवं चीन की दक्षिण एशियाई भूमिका में वृद्धि
अमेरिका-चीन	व्यापार, प्रौद्योगिकी एवं रणनीतिक प्रतिस्पर्धा	व्यापक इंडो-पैसिफिक शक्ति संतुलन को प्रभावित करता है
अमेरिका-पाकिस्तान	आतंकवाद, परमाणु सुरक्षा, क्षेत्रीय स्थिरता	सीमित लेकिन निरंतर अमेरिकी क्षेत्रीय सहभागिता
भारत-चीन	सीमा विवाद, व्यापार और क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा	एशियाई शक्ति संतुलन का केंद्रीय आयाम

स्रोत: व्हाइट हाउस (2025); अख्तर एवं क्रोनस्टैड (2025); बारियोस एवं क्रोनस्टैड (2025); क्रोनस्टैड (2023) के आधार पर लेखक द्वारा संकलित।

तालिका यह प्रदर्शित करती है कि दक्षिण एशिया का शक्ति संतुलन किसी एक द्विपक्षीय संबंध से निर्धारित नहीं होता। भारत-अमेरिका रणनीतिक सहयोग और चीन-पाकिस्तान साझेदारी दो महत्वपूर्ण धुरियाँ हैं, किंतु अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा और भारत-चीन सीमा संबंध भी इन पर प्रभाव डालते हैं। वहीं अमेरिका-पाकिस्तान संबंधों का स्वरूप बदलने के बावजूद पाकिस्तान क्षेत्रीय सुरक्षा समीकरण से बाहर नहीं हुआ है। परिणामस्वरूप यह व्यवस्था स्थायी दो-गुटीय संरचना के बजाय परस्पर निर्भर और बदलते हितों वाली बहुस्तरीय रणनीतिक संरचना के रूप में दिखाई देती है।

इंडो-पैसिफिक रणनीति और अमेरिकी भूमिका

इंडो-पैसिफिक की अवधारणा ने दक्षिण एशिया के शक्ति संतुलन को व्यापक एशियाई समुद्री भू-राजनीति से जोड़ दिया है। भारत हिंद महासागर में अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण अमेरिकी इंडो-पैसिफिक दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण है। अमेरिका और भारत ने 2025 में स्वतंत्र एवं खुले इंडो-पैसिफिक के लिए अपनी निकट साझेदारी को केंद्रीय बताया और समुद्री सहयोग, वैध वाणिज्य तथा नौवहन की स्वतंत्रता के समर्थन पर बल दिया (व्हाइट हाउस, 2025)।

क्वाड के माध्यम से भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया का सहयोग भी इसी व्यापक संरचना का हिस्सा है। यद्यपि क्वाड औपचारिक सैन्य गठबंधन नहीं है, लेकिन समुद्री सुरक्षा, आपदा प्रतिक्रिया, तकनीकी सहयोग और रणनीतिक समन्वय के कारण इसका भू-राजनीतिक महत्व बढ़ा है। चीन की बढ़ती समुद्री और सैन्य क्षमता के संदर्भ में यह सहयोग एशिया में शक्ति के अत्यधिक केंद्रीकरण को रोकने वाली व्यापक संतुलनकारी प्रवृत्ति के रूप में देखा जा सकता है।

आर्थिक संबंध, प्रतिस्पर्धा और भू-अर्थशास्त्र

वर्तमान अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में शक्ति संतुलन केवल सैन्य गठबंधनों से निर्धारित नहीं होता। व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी, आपूर्ति शृंखला और आधारभूत संरचना परियोजनाएँ भी रणनीतिक शक्ति के महत्वपूर्ण साधन बन चुकी हैं। चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा इस भू-अर्थशास्त्रीय परिवर्तन का प्रमुख उदाहरण है। इसके विपरीत भारत और अमेरिका व्यापार, तकनीकी सहयोग, ऊर्जा तथा आपूर्ति शृंखलाओं में सहयोग को बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं।

अख्तर एवं क्रोनस्टैड (2025) ने व्यापार और निवेश को भारत-अमेरिका संबंधों का प्रमुख पहलू बताया है, यद्यपि शुल्क और अन्य व्यापारिक प्रतिबंध दोनों देशों के आर्थिक संबंधों में मतभेद भी उत्पन्न करते रहे हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि रणनीतिक साझेदारी आर्थिक मतभेदों को स्वतः समाप्त नहीं करती। इसी प्रकार अमेरिका और चीन के बीच व्यापक व्यापारिक संबंध बने रहने के बावजूद शुल्क, तकनीक और आपूर्ति शृंखला से जुड़े विवाद उनकी रणनीतिक प्रतिस्पर्धा का महत्वपूर्ण भाग हैं।

शोध उद्देश्यों के आधार पर समग्र विश्लेषण

प्रथम शोध उद्देश्य के संदर्भ में विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोण में अमेरिका की भूमिका समय के साथ पाकिस्तान-केंद्रित सुरक्षा नीति से आगे बढ़कर भारत के साथ व्यापक रणनीतिक साझेदारी तथा चीन के साथ वैश्विक प्रतिस्पर्धा की दिशा में विकसित हुई है। इसके बावजूद अमेरिका ने पाकिस्तान से संबंध समाप्त नहीं किए हैं। अतः अमेरिकी नीति का वर्तमान स्वरूप भारत के साथ दीर्घकालिक रणनीतिक अभिसरण, चीन के साथ प्रतिस्पर्धा और पाकिस्तान के साथ चयनात्मक सहभागिता का मिश्रण है।

दूसरे उद्देश्य के संदर्भ में पाया गया कि दक्षिण एशिया का शक्ति संतुलन अब भारत-पाकिस्तान के पारंपरिक द्विपक्षीय संघर्ष तक सीमित नहीं है। चीन-पाकिस्तान साझेदारी, भारत-चीन सीमा प्रतिस्पर्धा, भारत-अमेरिका रणनीतिक सहयोग और अमेरिका-चीन वैश्विक प्रतिस्पर्धा ने इसे व्यापक त्रिकोणीय तथा इंडो-पैसिफिक शक्ति संरचना से जोड़ दिया है। सैन्य व्यय, रक्षा प्रौद्योगिकी, परमाणु क्षमता, आर्थिक गलियारे, समुद्री सुरक्षा और उच्च प्रौद्योगिकी इस शक्ति संतुलन के नए आयाम हैं।

समग्रतः अध्ययन यह संकेत करता है कि अमेरिका भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोण में क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को प्रभावित करने वाली प्रमुख बाह्य शक्ति है, किंतु वह इस संतुलन का एकमात्र निर्धारक नहीं है। भारत की रणनीतिक स्वायत्तता, चीन की बढ़ती शक्ति, पाकिस्तान की परमाणु क्षमता और चीन के साथ उसकी साझेदारी क्षेत्रीय संरचना को स्वतंत्र रूप से प्रभावित करती हैं। अतः भविष्य में दक्षिण एशिया की स्थिरता इस बात पर निर्भर करेगी कि ये शक्तियाँ प्रतिस्पर्धा और प्रतिरोध के साथ संवाद, संकट प्रबंधन और आर्थिक सहयोग के लिए कितनी संस्थागत व्यवस्थाएँ विकसित कर पाती हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन "भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोणीय संबंधों में अमेरिका की भूमिका: क्षेत्रीय शक्ति संतुलन का अध्ययन" से यह निष्कर्ष निकलता है कि दक्षिण एशिया की समकालीन भू-राजनीतिक संरचना भारत, चीन और पाकिस्तान के पारस्परिक संबंधों के साथ-साथ संयुक्त राज्य अमेरिका की रणनीतिक प्राथमिकताओं से भी गहराई से प्रभावित होती है। भारत-पाकिस्तान की ऐतिहासिक प्रतिद्वंद्विता, भारत-चीन सीमा विवाद, चीन-पाकिस्तान रणनीतिक साझेदारी, परमाणु प्रतिरोध तथा अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा ने क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को अत्यंत जटिल और बहुस्तरीय बना दिया है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि अमेरिका की दक्षिण एशिया नीति स्थिर नहीं रही, बल्कि वैश्विक और क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुरूप निरंतर परिवर्तित हुई है। शीत युद्ध के दौरान पाकिस्तान अमेरिकी सुरक्षा रणनीति में महत्वपूर्ण स्थान रखता था, जबकि वर्तमान समय में भारत के साथ अमेरिका की रणनीतिक साझेदारी रक्षा, प्रौद्योगिकी, समुद्री सुरक्षा, व्यापार और इंडो-पैसिफिक सहयोग जैसे क्षेत्रों तक विस्तृत हो चुकी है।

अध्ययन के प्रथम उद्देश्य के संदर्भ में यह पाया गया कि भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोण में अमेरिका की भूमिका अब केवल भारत-पाकिस्तान विवादों के प्रबंधन अथवा पाकिस्तान के साथ सुरक्षा सहयोग तक सीमित नहीं है। चीन के आर्थिक, सैन्य और तकनीकी प्रभाव में वृद्धि ने अमेरिकी एशिया नीति को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इस परिवर्तित रणनीतिक वातावरण में भारत अमेरिका के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय साझेदार के रूप में उभरा है। दोनों देशों के बीच बढ़ता रक्षा एवं तकनीकी सहयोग भारत की सामरिक क्षमताओं को सुदृढ़ करने में सहायक है। फिर भी भारत अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखते हुए अमेरिकी औपचारिक गठबंधन व्यवस्था से अलग स्वतंत्र विदेश नीति का अनुसरण करता है। इसलिए भारत-अमेरिका संबंधों को केवल चीन को संतुलित करने वाली व्यवस्था के रूप में देखने के बजाय साझा हितों पर आधारित व्यापक रणनीतिक साझेदारी के रूप में समझना अधिक उचित है।

दूसरे शोध उद्देश्य के संदर्भ में अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि दक्षिण एशिया का शक्ति संतुलन अब केवल भारत और पाकिस्तान की पारंपरिक प्रतिद्वंद्विता से निर्धारित नहीं होता। चीन-पाकिस्तान रणनीतिक सहयोग ने इस व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण सामरिक आयाम जोड़ा है। रक्षा सहयोग, आर्थिक संपर्क तथा चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे जैसी पहलों ने दोनों देशों की साझेदारी को व्यापक बनाया है। दूसरी ओर, भारत-अमेरिका सहयोग और इंडो-पैसिफिक में विकसित होती रणनीतिक साझेदारियाँ क्षेत्रीय शक्ति समीकरण को पुनर्गठित कर रही हैं। पाकिस्तान की परमाणु क्षमता, चीन के साथ उसके संबंध और क्षेत्रीय सुरक्षा में उसकी भूमिका के कारण अमेरिका के लिए पाकिस्तान की रणनीतिक प्रासंगिकता भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है।

समग्रतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोण में अमेरिका एक महत्वपूर्ण बाह्य शक्ति है, परंतु क्षेत्रीय शक्ति संतुलन का एकमात्र निर्धारक नहीं है। भारत की बढ़ती वैश्विक भूमिका, चीन की आर्थिक एवं सैन्य शक्ति, पाकिस्तान की रणनीतिक स्थिति और परमाणु क्षमता तथा इन देशों के बीच बदलती साझेदारियाँ इस संतुलन को निरंतर प्रभावित करती हैं। भविष्य में दक्षिण एशिया की शांति और स्थिरता के लिए केवल सैन्य प्रतिरोध और शक्ति संतुलन पर्याप्त नहीं होंगे; संवाद, संकट प्रबंधन, आर्थिक सहयोग, पारदर्शिता और बहुपक्षीय कूटनीति भी समान रूप से आवश्यक होंगे। अतः अमेरिका की भूमिका तभी अधिक सकारात्मक सिद्ध हो सकती है जब उसकी रणनीति शक्ति संतुलन बनाए रखने के साथ-साथ क्षेत्रीय तनाव को नियंत्रित करने, सहयोग के अवसर बढ़ाने और दीर्घकालिक शांति एवं स्थिरता को प्रोत्साहित करने की दिशा में केंद्रित हो।

संदर्भ

- अख्तर, एस. आई., एवं क्रोनस्टैड, के. ए. (2025)। अमेरिका-भारत संबंध: एक सारांश। कांग्रेसनल रिसर्च सर्विस।
- क्रोनस्टैड, के. ए. (2023)। पाकिस्तान और अमेरिका-पाकिस्तान संबंध। सीआरएस रिपोर्ट संख्या आर47565। वाशिंगटन, डी.सी.: कांग्रेसनल रिसर्च सर्विस।
- क्रोनस्टैड, के. ए. (2025)। वसंत 2025 में भारत-पाकिस्तान संघर्ष। कांग्रेसनल रिसर्च सर्विस।
- कोहेन, एस. पी. (2001)। भारत: उभरती हुई शक्ति। वाशिंगटन, डी.सी.: ब्रुकिंग्स इंस्टीट्यूशन प्रेस।
- गांगुली, एस. (2002)। अंतहीन संघर्ष: 1947 से भारत-पाकिस्तान तनाव। न्यूयॉर्क: कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।
- गार्वर, जे. डब्ल्यू. (2001)। दीर्घकालिक प्रतिस्पर्धा: बीसवीं शताब्दी में भारत-चीन प्रतिद्वंद्विता। सिएटल: यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन प्रेस।
- टेलिस, ए. जे. (2005)। एक नई वैश्विक शक्ति के रूप में भारत: संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए कार्ययोजना। वाशिंगटन, डी.सी.: कार्नेगी एंडोमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस।
- पर्कोविच, जी. (1999)। भारत का परमाणु बम: वैश्विक परमाणु प्रसार पर प्रभाव। बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।
- पॉल, टी. वी. (2005)। भारत-पाकिस्तान संघर्ष: एक दीर्घकालिक प्रतिद्वंद्विता। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

फ्रावेल, एम. टेलर। (2008)। मजबूत सीमाएँ, सुरक्षित राष्ट्र: चीन के क्षेत्रीय विवादों में सहयोग और संघर्ष। प्रिंसटन: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

बारियोस, आर., एवं क्रोनस्टैड, के. ए. (2025)। भारतीय प्रधानमंत्री की 2025 की चीन यात्रा और भारत-चीन संबंध। कांग्रेसनल रिसर्च सर्विस।

मदान, टी. (2020)। निर्णायक त्रिकोण: शीत युद्ध के दौरान चीन ने अमेरिका-भारत संबंधों को कैसे आकार दिया। वाशिंगटन, डी.सी.: ब्रुकिंग्स इंस्टीट्यूशन प्रेस।

मार्की, डी. एस. (2013)। पाकिस्तान से बाहर निकलने का मार्ग नहीं: इस्लामाबाद के साथ अमेरिका के जटिल संबंध। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

मेडकाल्फ, आर. (2020)। इंडो-पैसिफिक के लिए प्रतिस्पर्धा: चीन भविष्य को क्यों निर्धारित नहीं करेगा। मैनेचेस्टर: मैनेचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस।

मोहन, सी. राजा। (2012)। समुद्र मंथन: इंडो-पैसिफिक में भारत-चीन प्रतिद्वंद्विता। वाशिंगटन, डी.सी.: कार्नेगी एंडोमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस।

मॉर्गेन्थाऊ, एच. जे. (1948)। राष्ट्रों के बीच राजनीति: शक्ति और शांति के लिए संघर्ष। न्यूयॉर्क: अल्फ्रेड ए. नॉफ।

लियांग, एक्स., तियान, एन., लोपेस दा सिल्वा, डी., स्काराज़ातो, एल., करीम, जेड. ए., एवं रिकार्ड, जे. जी. (2025)। विश्व सैन्य व्यय की प्रवृत्तियाँ, 2024। स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान।

लॉरेंस, एस. वी., एवं सटर, के. एम. (2023)। चीन परिचय: अमेरिका-चीन संबंध। सीआरएस रिपोर्ट संख्या आईएफ10119। वाशिंगटन, डी.सी.: कांग्रेसनल रिसर्च सर्विस।

वॉल्डज़, के. एन. (1979)। अंतरराष्ट्रीय राजनीति का सिद्धांत। रीडिंग, मैसाचुसेट्स: एडिसन-वेस्ली पब्लिशिंग कंपनी।

व्हाइट हाउस। (2025)। संयुक्त राज्य अमेरिका-भारत संयुक्त नेताओं का वक्तव्य। संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति का कार्यकारी कार्यालय।

व्हाइट हाउस। (2025)। संयुक्त राज्य अमेरिका-भारत संयुक्त नेताओं का वक्तव्य। वाशिंगटन, डी.सी.: संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति का कार्यकारी कार्यालय।

स्मॉल, ए. (2015)। चीन-पाकिस्तान धुरी: एशिया की नई भू-राजनीति। न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।